किसान पुत्र ने विज्ञान जगत में किया हरियाणा का नाम रोशन

'जय विज्ञान' के नारे को साकार किया डा. ढींडसा ने

जांबाज रणबांकुरों और मेहनतकश किसानों की कर्मस्थली हरियाणा के सपूत डॉक्टर कुलदीप सिंह ढींडसा ने विज्ञान जगत में अपनी उल्लेखनीय सेवा से '**जय जवान, जय किसान**' के नारे को और आगे बढ़ाते हुए '**जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान**' के रूप में साकार करके भारत ही नहीं, विश्वभर में हरियाणा की माटी के गौरव को चार चाँद लगा दिए हैं। देश के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इस वरिष्ठ वैज्ञानिक ने रसायन एवं पर्यावरण विज्ञान में अपने शोध एवं बौद्धिक कौशल का लोहा मनवाकर विश्व के वैज्ञानिक जगत को भी अपना कायल बना लिया हैं। डॉक्टर कुलदीप सिंह ढींडसा 34 वर्ष तक के सेवाकाल में देश और विदेश में इतने अवार्ड और पदक हासिल कर चुके हैं कि इन सबका लेखा जोखा रखना शायद उनके लिए भी संभव नहीं होगा।

हरियाणा के अंबाला जिले के गांव लन्ढा में समृद्ध किसान चौधरी मामराज सिंह के घर में माता शांतिदेवी की कोख से सन् 1945 में जन्मे कुलदीप सिंह ने बालकपन में ही स्पष्ट संकेत दे दिया था कि '**कुल**' का यह '**दीप**' बड़ा होकर अपने कुल के नाम को अवश्य ही रोशन करेगा। ढींडसा परिवार के इस पूत ने तब '**पूत के पांव पालने में दिखने**' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए अपनी विलक्षण बौद्धिक प्रतिभा का परिचय दे दिया था, जब उसने मात्र नौ वर्ष की उम्र में अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप और पत्र व्यवहार करने में महारत हासिल कर ली थी।

ग्रामीण पृष्ठभमि में पले-बढ़े कुलदीप सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा भी गांवों में ही पूरी हुई। उनके गांव में स्कूल नहीं था, इसलिए उन्हें प्रारम्भिक शिक्षा के लिए हर रोज एक कि.मी. आना और जाना पड़ता था। पांचवी कक्षा में आते-आते तो यह दूरी और बढ़ गई तथा राजकीय विद्यालय केसरी से पांचवी से दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी करने के लिए उन्हें हर रोज दो मील आना-जाना पड़ता था। वे सदैव सभी परिक्षाओं में प्रथम तीन स्थानों पर रहे, जिसका श्रेय वे अपने शिक्षकों के साथ-साथ अपने पिता मामराज सिंह को देते हैं।

कुलदीप सिंह कॉलेज की शिक्षा के लिए अंबाला आए तथा 1962 में जी.एम.एन. कॉलेज अंबाला कैंट से प्री-इन्जिरियरिंग की। तत्पश्चात पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से 1966 में एम.एस.सी. (ऑनर्स) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वहीं से 1971 में प्रोफेसर रामचंद पाल भूतपूर्व

कुलपति के निर्देशन में पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की, जिसके लिए उन्हें '**नैशनल ब्यूरो ऑफ स्टैंडर्डज़ वाशिंगटन**' की एक परियोजना के तहत छात्रवृति मिली। वे सन् 1971 में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में सहायक प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए और यहीं से शुरू हुआ उनका विज्ञान जगत में अद्वितीय योगदान, उत्कृष्ट शोध, अभूतपूर्व सफलता और अवार्ड हासिल करने का सिलसिला जो आज तक भी अनवरत जारी है।

रसायन विज्ञान में अभूतपूर्व योगदान के लिए डॉक्टर कुलदीप सिंह ढींडसा को 1976 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने '**भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी अवार्ड**' से अलंकृत किया। हरियाणा में यह अवार्ड प्राप्त करने वाले वह प्रथम वैज्ञानिक है। इसी वर्ष वह एक जर्मन फैलोशिप के अंतर्गत उन्नत अनुसंधान के लिए जर्मनी गए जहां उन्होंने हैनोवर विश्वविद्यालय में (1976–78) काम किया।

डॉक्टर ढींडसा का देश प्रेम का जज्बा और सेवा भाव भी एक मिसाल है। सफलता की सीढ़िया चढ़ना शुरू करते ही सन् 1978 में जर्मनी के हैनोवर विश्वविद्यालय ने उन्हें '**अनुसंधान उपकरण उपहार अवार्ड**' से नवाजा। इस विश्वविद्यालय ने उन्हें वहीं काम करने की पेशकश की थी, लेकिन देशप्रेम एवं सेवा के लिए डॉक्टर ढींडसा ने इसे नम्रतापूर्वक मना कर दिया। सकारात्मक दृष्टिकोण के धनी डॉक्टर ढींडसा को 1966 में विज्ञान एवं समाज के प्रति उत्कृष्ट सेवा के लिए '**डॉक्टर अम्बेडकर राष्ट्रीय सेवाश्री अवार्ड**' से सम्मानित किया गया। इनके द्वारा हासिल किए गए राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों में अमेरिकन सरकार का '**फुलब्राइट स्कोलर अवार्ड**' भारतीय रसायन विज्ञान परिषद् का '**प्रोफेसर पी.के.बोस. अवार्ड**' एवं '**ज्ञान चन्द जैन स्मारक अवार्ड**' प्रमुख हैं। उपलब्धियों की पराकाष्ठा तब हुई जब वर्ष 2004 में राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान अकादमी ने डॉक्टर कुलदीप सिंह ढींडसा को '**बेस्ट साँईटिस अवार्ड 2003**' प्रदान किया। जर्मनी और अमेरिका में कई बार विजिटिंग प्रोफेसर रह चुके डॉक्टर ढींडसा का अनुसंधान 160 शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित हो चुका है। उन्होंने अपने अनुसंधान को अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में प्रस्तुत करके ख्याति एवं प्रशंसा पाई हैं। अनुसंधान के सिलसिले में उन्होंने जर्मनी, फ्रांस, स्पेन, स्विटजरलैण्ड, स्वीडन, डैनमार्क, इंगलैण्ड व अमेरिका समेत अनेक देशों की यात्रा की। उन्हें 2001 में अमेरिकन राष्ट्रपति बिल कलिंटन के साथ रात्रिभोज करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे अनेक फेलोशिप से सम्मानित हो चुके हैं। जिनमें रायल सोसाइटी ऑफ कैमिस्ट्री, लन्दन (1991); अमेरिकन इन्स्टीचयूट ऑफ कैमिस्टस (1993); राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (1991) व राष्ट्रीय पर्यावरण विज्ञान अकादमी (2003) प्रमुख

हैं। वर्ष 2015 में पंजाब अकैडमी ऑफ साईंसिज़ ने रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उनके जीवन-प्रयन्त योगदान के लिए मानद फैलोशिप से सम्मानित किया।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में अपने 34 साल के सेवाकाल में विभिन्न पदों जैसे अध्यक्ष, रसायन व जीव रसायन विभाग; डीन, बेसिक साईंसिज़; डीन, पोस्टग्रेजुएट स्टडीज; निदेशक, स्टूडैन्ट वैलफेयर; इन्टरनैशनल स्टूडैन्टस एडवाईजर; वाईस चेयरमैन कैम्पस स्कूल; चेयरमैन स्पोर्टस कॉन्सिल पर रहते हुए उन्होंने अपनी प्रशासनिक कुशलता एवं गतिशीलता की उल्लेखनीय छाप छोड़ी।

वर्ष 2008 में दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय ने डा. ढींडसा को '**विज्ञान रत्न**' की उपाधि से सम्मानित किया। उसी वर्ष इंडिया इंटरनेशनल फ्रैंडशिप सोसाइटी नई दिल्ली ने उन्हें '**भारत गौरव अवार्ड**' से नवाजा। उनको यह अवार्ड दिल्ली की तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने शिक्षा के क्षेत्र एवं विशेषकर तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रचार प्रसार में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया। 20 अगस्त 2009 को पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी की 66वीं जयंती के अवसर पर केन्द्रिय गृह राज्यमंत्री श्री अजय माकन ने डा. ढींडसा को '**राष्ट्रीय एकता सम्मान**' से विभूषित किया। डॉ. ढींडसा को यह सम्मान सर्वधर्म सम-भाव तथा जाति, धर्म एवं मज़हब से ऊपर उठकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में दिए गए योगदान के लिए दिया गया। अप्रैल 2010 में वैदिक संस्कृति केंद्र हिसार ने डॉ. ढींडसा को '**वैदिक रत्न**' की मानद उपाधि से नवाजा। यह सम्मान उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान एवं वैदिक संस्कृति के मूल्यों को जीवन में अपनाने व प्रचार-प्रसार करने के उपलक्ष्य में दिया गया।

शुद्ध एवं व्यवहारिक रसायन विज्ञान में उनके जीवन-कालिक योगदान के लिए आल इंडिया कौंसिल ऑफ इन्टिलैक्चुयलज़ ने उन्हें वर्ष 2011 में '**हरियाणा रत्न**' से सम्मानित किया। इंडियन कैमिकल सोसायटी ने प्रो. ढींडसा को रसायन विज्ञान के अध्यापन एवं अनुसंधान में जीवन पर्यंत उत्कृष्ट योगदान एवं अभूतपूर्व उपलब्धियों के लिए '**लाईफ टाईम अचीवमैंट अवार्ड 2016**' से नवाजा।

पारिवारिक स्तर पर भी उनका जीवन सुखद रहा है। डॉ. कुलदीप ढींडसा का विवाह चौ. हरफूल सिंह आई.ए.एस. तत्कालीन डिप्टी कमिशनर हिसार की सपुत्री शंकुलता के साथ हुआ। इनके सपुत्र डॉ. अभिषेक ढींडसा एम.एम. विश्वविद्यालय मुलाना के डैन्टल कॉलेज में प्रोफेसर हैं। अभिषेक की शादी चौ. राम किशन मलिक एच.सी.एस. भूतपूर्व एस.डी.एम. की सपुत्री डॉ. प्रोमिला के साथ हुई। इस दम्पति के एक पुत्र दिव्यांश है। डॉ. ढींडसा की सपुत्री डॉ. पूजा राणा

ऐमिटी विश्वविद्यालय गुड़गांव में प्रोफेसर आफ मीडिया स्टडीज़ के पद पर कार्यरत है। पूजा का विवाह डा. ओम हरि राणा भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष गणित विभाग कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के सपुत्र संजय राणा से हुआ जोकि एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। राणा दम्पति के एक पुत्र दिव्यम है।

डॉ. ढींडसा का विचार है कि हर विद्यार्थी चाहे वह गांव में रहता हैं या दिल्ली–मुम्बई में, को शिक्षा के समान अवसर मिलने चाहिए। वे समझते हैं कि विज्ञान व टैक्नोलोजी व अन्य विषयों में उच्च स्तर की शिक्षा का ज्ञान देने के साथ–साथ विश्वविद्यालय का उद्देश्य विश्व स्तर के मानवतावादी नागरिक विकसित करना होना चाहिए। सभी धर्मों में सम विश्वास रखने, प्रतिदिन पूजा पाठ, नमाज व अरदास करने वाले डॉ. ढींडसा का कहना है कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत व आधुनिक टैक्नोलोजी के समन्वित नागरिक ही भारत को विकासशील से विकसित देश में परिवर्तित कर सकेंगे।

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार से सेवानिवृति के बाद 2007 में उन्होंने महर्षि मारकण्डेश्वर शिक्षण समूह, मुलाना (अंबाला) के महानिदेशक का पद संभाला और उस संस्थान को विश्वविद्यालय का दर्जा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे अब एम.एम. विश्वविद्यालय, मुलाना के नाम से जाना जाता है। तदोपरान्त डॉ. ढींडसा को सितम्बर 2007 में जननायक चौ. देवी लाल विद्यापीठ के महानिदेशक का पदभार ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया गया। उनके नेतृत्व में विद्यापीठ ने तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र के मानचित्र पर एक विशिष्ट पहचान बनाई।

डॉ. कुलदीप ढींडसा सेवानिवृति के बाद भी स्वयं को रिटायर्ड नहीं मानते। वह कई विश्वविद्यालयों की प्रबंधन समिति, चयन समिति व शैक्षणिक परिषद् के सदस्य के रूप में जुड़े हुए हैं। समय–समय पर वह अपने पूर्व अनुसंधान सहयोगियों व शोध छात्रों को नए रिसर्च प्रोजेक्टस बनाने व कार्यन्वित करने के बारे में परामर्श देते रहते हैं। रक्षा मंत्रालय के भरती एवं मूल्यांकन केंद्र में ऐम्पैनल्ड चेयरमैन के रूप में भी वह रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। साथ ही साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी अनेक कमेटियों के चेयरमैन/मैम्बर के रूप में उनकी सेवाएं लेता रहता है। डॉ. ढींडसा प्रभु को स्मरण करते हुए कृतज्ञता पूर्वक कहते हैं कि यह सब उसकी कृपा का फल है कि अभी भी उन्हें शिक्षा व विज्ञान के क्षेत्र में सेवा करने के अवसर मिल रहे हैं जो उनके जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। उल्लेखनीय है कि 70 वर्ष की आयु में भी डॉ. ढींडसा प्रतिदिन तीन घंटे नियमित रूप से नवीनतम शोध कार्यों से खुद को अपडेट रखते हैं व लेख लिखने में व्यतीत करते हैं।